# मुहर्रमुल हराम

ePamphlet

بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

मुहर्रम का लफ़्ज़ी मतलब(शब्दकोश में),मना किया गया,हराम किया गया,पाक,बहुत बड़ाई वाला,और ऐहतराम के लाइक़ ये इन चार महीनों में से है जिसके बारे में अल्लाह सुबहाना व ताला ने इरशाद फरमायाः

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِیْ كِتٰبِ اللهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ (التوبہ:36)

"बेशक महीनों की तादाद अल्लाह के नज़दीक,जिस दिन से उसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया,अल्लाह की किताब में बारह महीने हैं,उनमें से चार हुरमत वाले हैं."

ये चार महीने ज़ुलक़ादा,ज़ुलहिज्जा,मुहर्रम और रजब हैं जो इस्लाम से पहले भी हुरमत वाले थे,अहले मक्का पहले तीना महीनों में हज और चोथे में उमरा करते,इस लिए इन महीनों में जंग व जदल बन्द करदी जाती थी और अमन की ज़मानत होती थी.

## मुहर्रम - नया साल

« मुहर्रम हिजरी कैलन्डर का वो महीना है,जिससे इस्लामी साल का आग़ाज़ होता है.

« हिजरत के17 वें साल में हज़रत अबु मुसा अशअरी رضی الله عنه के तवज्जो दिलाने पर हज़रत उमर رضی الله عنه ने सहाबा किराम رضی الله عنه से मशवरा किया और हज़रत अली رضی الله عنه के मशवरे से नबी ﷺ के हिजरत के वाक़्ये को इस्लामी साल की इब्तिदा क़रार दिया,और क्योंकि मदीना मुनव्वरा की तरफ़ हिजरत का आगाज़ ज़ुलहिज्जाह के आख़िर में हुआ था,और उस के बाद जो चांद निकला वह मुहर्रम का था,इस लिए हज़रत उसमान رضی الله عنه के मशवरे से मुहर्रम को इस्लामी साल का पहला महीना क़रार दिया गया.(فتح الباری)

« वक़्त अल्लाह की वोह क़ीमती नेअमत है,जो ख़ास अंदाज़ और मुक़र्रर रफ़्तार से गुज़रता चला जा रहा है,हर नया साल पिछले साल को माज़ी बना देता है. साल तो अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ आते और गुज़रते रहेंगे,मगर इन्सान ने उस वक़्त को किस तरह और किन हालात में गुज़ारा वोह बाक़ी रह जाएगा.

© AL-JUANI INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

इस लिए आने वाला मुहर्रम हमें पैग़ाम दे रहा है के अपनी जिंदगी को फ़ायदामंद,बामक़सद और सही कामों मे इस्तेमाल किया जाए और अच्छे आमाल के ज़रिए इन घड़ियों को अपने हक़ में दलील बनाया जाए,ताकि आनेवाले वक़्त में कामयाबी नसीब हो और इन्सान मायुसी और महरुमी से बच सके.

जुनैद बग़दादी(रह)ने फ़रमाया है:"तुम हर पल ये देखते रहो कि तुम अल्लाह के कितने क़रीब हुए,और शैतान से कितने दूर हुए, और जन्नत से कितने क़रीब हुए,और दोज़ख़ से कितने दूर हुए ."

« नए साल का आग़ाज़ एक नए अज़म और जज़बे से किया जाए और इसके लिए ज़हनी व अमली तौर पर त्यारी की जाए मसलन

- अल्लाह तआला के साथ अपने ताल्लुक़ को मज़बूत करना
- इबादात को शौक़ और दिलचस्पी से अदा करने की कोशिश करना
- वालिदैन की ख़िदमत और रिश्तेदारों को उनका हक़ देने में बेहतरी लाना
- घर वालों और बच्चों की परवरिश और तरबियत की तरफ़ ध्यान देना.
- फ़ायदामंद इल्म हासिल करने और ज़ाती इस्लाह की मनसूबा बन्दी करना
- मोआशरे के कम हैसियत लोगों की कामयाबी और भलाई के लिए कोशिश करना

# मुहर्रम और ख़ास तारीख़ी वाक़्यात

मुहर्रम के महीने को कुछ तारीख़ी वाक़्यात की वजह से ख़ास एहमियत हासिल है.

- फ़िरऔन ग़र्क़ हुआ और हज़रत मुसा(अ)और उनकी क़ौम को फ़िरऔन की ग़ुलामी से निजात मिली. (صحیح مسلم: ٢٦٥٨)

•आमुलफ़ील का मशहूर वाक़्या इसी महीने में पेश आया,जिसमें अबराहा हाथियों की फ़ौज के साथ ख़ाना काबा को तबाह करने आया था.

«हज़रत उमरرضي الله عنه पर क़ातिलाना हमले के बाद ज़ख़्मों की ताब ना लाते हुए पहली मुहर्रम सन23हिजरी को शहीद हुए.

«हज़रत हुसैनرضي الله عنه अपने ख़ानदान के बुहत से अफ़राद के साथ 10 मुहर्रम सन 61 हिजरी को मैदाने करबला में शहीद हुए.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# मुहर्रम और रोज़ा

मुहर्रम के रोज़े की एहमियत बयान करते हुए आप ﷺ ने फ़रमायाः

**اَفْضَلُ الصِّيَامِ بَعْدَرَمَضَانَ شَهْرُ اللّٰهِ الْمُحَرَّ مُ** (صحيح مسلم:٢٧٥٥)

"रमज़ान के बाद अफज़ल तरीन रोज़ा अल्लाह सुबहाना व तआला के महीने मुहर्रम का है-"

# आशुरा का रोज़ा

मुहर्रम की दस तारीख़ को आशुरा कहा जाता है, यह दिन अल्लाह तआला की ख़ास रेहमत और बर्कत का हामिल है.

हज़रत आयशाرضی الله عنه से रिवायत है कि "जाहिलियत के दिनों में क़ुरैश आशुरा के दिन का रोज़ा रखते थे और रसूल अल्लाह ﷺ भी,फिर हिजरत मदीना के बाद भी आप ﷺ ने यह रोज़ा रखा और (सहाबा कराम رضی الله عنه को भी) रखने का हुक्म दिया,मगर जब रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुए,तब आप ﷺ ने फ़रमाया जो चाहे अब इसका रोज़ा रखे और जो चाहे छोड़दे "-(صحيح مسلم:٢٦٣٧)

हज़रत अबु क़तादाहرضی الله عنه कहते हैं, के नबी ﷺ ने फ़रमायाः

**صِيَامُ يَوْ مِ عَاشُوْرَاءَ أَحْتَسِبُ عَلَى اللّٰهِ اَنْ يُكَفِّرَالسَّنَةَ الَّتِىْ قَبْلَهُ** (صحيح مسلم:٢٧٤٦)

"मैं समझता हूँ कि अल्लाह तआला आशुरा के दिन के रोज़े के बदले गुज़िश्ता एक साल के गुनाह माफ़ कर देगा."

हज़रत अबु क़तादाहرضی الله عنه से ही रिवायत हैः

**سُئِلَ عَنْ صَوْمِ يَوْ مِ عَا شُوْرَاءَ فَقَا لَ يُكَفِّرُالسَّنَةَ الْمَاضِيَةَ** (صحيح مسلم :٢٧٤٧)

आशूरा के दिन के रोज़े के बारे में पूछा गया तो आप ﷺ ने फ़रमायाः

"ये पिछले एक साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है-"

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बासرضی الله عنه से रिवायत हैः

जब रसूल अल्लाहﷺ मदीना तशरीफ़ लाऐ तो यहूद को यौमे आशूर का रोज़ा रखते देखा तो पुछा तुम इस दिन का रोज़ा क्यों रखते हो,उन्हों ने जवाब दिया" ये अज़मत वाला दिन है, इस दिन

© AHUJA INTERNATIONAL FOUNDATION

उनकी क़ौम को फ़िरऔन से निजात दी,और फ़िरऔन और उसकी क़ौम को ग़र्क़ कर दिया,तो हज़रत मुसा(अस) ने उस दिन शुक्राने के तौर पर रोज़ा रखा,तो इस लिए हम भी ये रोज़ा रखते हैं.आप ﷺ ने फ़रमायाःमूसा(अ)से तुम्हारी निस्बत हम ज़्यादा क़रीब हैं." इस लिए रसूल अल्लाह ﷺ ने ख़ुद भी रोज़ा रखा और सहाबा करामرضي الله عنه को भी इसका हुक्म दिया.(صحيح مسلم:٢٦٥٨)

रोज़े में यहूद की मुशाबेहत से बचने का हुक्म

यहूद की मुशाबेहत से बचने के लिए रसूल अल्लाह ﷺ ने 10 के साथ 9 मुहर्रम का रोज़ा रखने की ख़्वाहिश का इज़हार फ़रमाया. हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बासرضي الله عنه से रिवायत हे के रसूल अल्लाह ﷺ ने आशुरा का रोज़ा रखा और लोगों को भी उसको रखने का हुक्म दिया,तो लोगों ने कहा "ऐ अल्लाह के रसुल ﷺ यह वोह दिन है जिस की यहूद और ईसाई इज़्ज़त करते हैं,आप ﷺ ने फ़रमायाः"जब अगला साल आएगा अगर अल्लाह ने चाहा तो हम 9 तारीख़ का रोज़ा(भी)रखेंगे ।(صحيح مسلم: ٢٦٦٦)

लेकिन अगला मुहर्रम आने से पहले ही आप ﷺ की वफ़ात हो गई. इस लिए 10 मुहर्रम के साथ 9 मुहर्रम का रोज़ा रखना अफ़ज़ल है. किसी वजह से 9 मुहर्रम का रोज़ा ना रखा जासके तो 11 मुहर्रम का रोज़ा साथ रखना चाहिए.

इस से मालूम हुआ कि ग़ैर मुस्लिम क़ौमों के साथ मामूली मुशाबेहत से भी बचने की ज़रुरत है,चाहे इबादात में हो या अक़ाइद में,आदात या तौर तरीक़े में हो या रसमो रिवाज में।

हज़रत अबदुल्लाह बिन उमरرضي الله عنه से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः

مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ (سنن ابی داؤد:٤٠٣١)

"जिस ने किसी क़ौम की मुशाबेहत इख़्तियार की,वह उन्हीं में से है."

## मुहर्रम की हुर्मत का ख़्याल रखें

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने जहां हुर्मत वाले महिनों का ज़िक्र फ़रमाया है,वहां साथ फ़रमायाः

لَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ (التوبة:٣٢)

“पस इन महीनों में तुम अपने उपर ज़ुल्म ना करो."

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لاَ تُظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ (التوبة: ٣٢)

"पस इन महीनों में अपने उपर ज़ुल्म ना करो."

यानी कोई ऐसा काम ना करो जो अल्लाह तआला की नाराज़गी और उसकी नाफ़रमानी का हो गुनाह,बिदआत और मुनकरात में से हो।

· मुहर्रम हुर्मत वाले महीनों में से एक है,चुनांचे ज़रुरी है कि हम इसकी हुरमत का लिहाज़ रखें और हर ऐसे काम करने से बचें जो किसी भी तरह इसकी हुर्मत को पामाल करता हो।

« हर तरह के,झगड़े,फ़ितने व फ़साद से अपने आप को दूर रखें।

« अपने भाईयों और साथियों की जान,माल,और इज़्ज़त की हुर्मत का ख़्याल रखें.

इबने अब्बास رضی الله عنه से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने हज्जतुल विदा के मौक़े पर फ़रमायाः

"तुम्हारा ख़ून,तुम्हारा माल,तुम्हारी इज़्ज़त एक दूसरे पर इसी तरह हराम है,जिस तरह तुमहारे आज के दिन की,इस शहर की और इस महीने की हुर्मत है"। (صحیح البخاری:١٧٣٩)

क्या नबी ﷺ का ये पैग़ाम हमारे लिए काफ़ी नहीं?

« ज़बान और अमल दोनों से हर ऐसे काम से बचें जो दूसरों के लिए अज़ियत और तकलीफ़ का ज़रिया बने,या जिससे किसी की दिल आज़ारी होती हो।

• कोइ नाराज़गी या शिकायत हो भी तो वो ख़तम करदें,और सुलह व अमन का पैग़ाम क़ौल व अमल ज़रिए आम करें

« सहाबा करामرضی الله عنه जैसी बेमिसाल शख़्सियात के लिए कोई ग़लत बात ना कहें जिन से उनकी बेअदबी और तौहीन हो।

• अल्लाह तआला हम सबको सिराते मुसतक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए- आमीन

**AlHuda Welfare Trust India**
Post Box Number 444
Basavanagudi
Bangalore 560004 ,India
Landline: +918040924255.
official email: alhuda.india@gmail.com
Mobile phone: +91-9535612224
website: www.farhathashmi.com

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

AL-HUDA Publications (Pvt) Ltd.